International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.065
Vol.8 No.2 Nov – Dec 2020

समकालीन कविता का प्रतिपक्ष : अशोक वाजपेयी की कविता

प्रा.डॉ.भारत वा. उपाध्य

वारणा महाविद्यालय, ऐतवडे खुर्द,जिला. सांगली (महा.)

समकालीन कविता की प्रमुख प्रवृत्तियों का आकलन करते समय हमने देखा कि समकालीन कविता मुख्य रूप से सामाजिक तथा राजनीतिक सरोकारों के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देती है। समकालीन कविता पर अपने समय की राजनीति का व्यापक प्रभाव दिखाई देता है, प्रत्युत ऐसा भी कहा जा सकता है कि समकालीन कविता अपने समय की राजनीतिक परिवेश की प्रतिक्रिया के रूप में उभरी कविता है। आलोचकों के मतानुसार यह समकालीन कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। अशोक वाजपेयी के समग्र कविता का अनुशीलन करने पर स्पष्ट होता है कि वे समकालीन कवि के रूप में प्रतिष्ठित होने के बावजूद उनकी कविता में समकालीन कविता का पक्ष उभरता नहीं. बल्कि वे उससे दूर भागते नजर आते हैं। अपने समय के समाज का, उसकी समस्याओं की उपेक्षा का भाव उनके लेखन में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। किन्तु यह भी सच है कि उनकी कविता विशुद्ध कलात्मक आनंद प्रदान करती है। क्रांति और परिवर्तन को केवल नारों में बंद करने वाली कविता की अपेक्षा अशोक वाजपेयी जीवन के रंगारंग विविधता को अभिव्यक्त करती है। आलोचकों की दृष्टि से यह अशोक वाजपेयी की समकालीन कविता का प्रतिपक्ष है। इस संदर्भ में अशोक वाजपेयी का 'कविता की वापसी ' शीर्षकांतर्गत अभिव्यक्त चिंतन उनके इस प्रतिपक्ष की जबरदस्त वकालत करता है - "कवि एक बढ़ते हुए हजूम या हरहराती बाढ़ में झुनझुनें, रुमाल, पन्नियाँ, पेन्सिलें आदि दौड़ते हुए भी उठाते चलता है। हिन्दी में कविता की केन्द्र की ओर वापसी का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि अपनी सामाजिक जिम्मेदारी के अहसास को कमजोर

और अपनी संघर्ष धर्मिता को धूमिल किए बिना वह जिंदगी की रंगारंग विविधता की ओर भी लौट रही है। 1

अशोक वाजपेयी कविता में विचारधाराओं द्वारा उकसाये भावावेग से अभिव्यक्त कलाकृति को इतना महत्व नहीं देते। काव्य-दृष्टि को स्वतंत्र और स्वाधीन दृष्टि मानते हुए वे साहित्य जगत में इसी दृष्टि की प्रतिष्ठापना करने में निरंतर प्रयासरत दिखाई देते है। अशोक वाजपेयी का समस्त लेखन, फिर वह चाहे कविता हो, आलोचना हो, यात्रा र्णन हो अथवा किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति उसमें वे कलाकृति की कलात्मकता प्रधान मानते हैं। अशोक वाजपेयी की इस स्वतंत्र दृष्टिकोण का ही परिणाम है कि की समकालीन कविता के प्रतिपक्ष के रूप में न केवल खड़ी होती है बल्कि अपनी शिष्टयपूर्ण उपस्थिति से समकालीन कविता को पर्याय में हिन्दी साहित्य को समृद्ध करती है। अशोक वाजपेयी अपने मूलगामी और बहुआयामी सरोकारों और भाषिक समृद्धि के कारण समकालीन काव्य आंदोलन के प्रतिपक्ष के कवि के रूप में उभरते हैं। हिन्दी के विख्यात कवि ज्ञानेंद्रपति से हमारा इस संदर्भ में जो पत्राचार हुआ उसमें उन्होंने अशोक वाजपेयी की कविता का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि -

"आज के अधिकतर कविता के प्रसंग में आज भी अशोक वाजपेयी की कविता अपने मूलगामी और बहुआयामी सरोकारों और भाषिक समृद्धि के कारण समकालीन कविता का प्रतिपक्ष बनी हुई है। 2

जिम्मेदार प्रतिपक्ष के निर्वाह के कारण ही अशोक वाजपेयी का स्थान समकालीन कविता में विशेष प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ। अशोक वाजपेयी की कविता को समकालीन कविता का प्रतिपक्ष कहा जाता है, वह प्रचलित काव्य पक्ष का दूसरा पहलू है। राजनीति में सत्ता पक्ष का जितना महत्व एवं मूल्य होता है लगभग वही महत्व कविता के प्रतिपक्ष का है। हिन्दी कविता अपने आरंभिक काल से विशिष्ट अर्थों में प्रतिपक्ष की भूमिका का निर्वाह करती आयी है। प्रायः कविता समाज, व्यक्ति, देश, प्रकृति, शोषण, परिवर्तन, क्रांति आदि के विविध रूपों को सार्थक रूप में संवेदन करती है। यह कविता का एक पक्ष है। समकालीन कविता के प्रतिपक्ष में पड़ोस, उपस्थिति अनुपस्थिति, पूर्वजों की स्मृति, प्रेम के विविध रूपकों को अभिव्यक्त करती है। अशोक वाजपेयी अपनी कविता के

माध्यम से अपने पूर्वजों की स्मृतियाँ, घर-पड़ोस का संजिदा वर्णन कर सबके प्रति उनके मन में जो आस्था तथा श्रद्धा का भाव है, उसे शब्द रूप प्रदान करते हैं।

वास्तविकता यह भी है कि कविता मनुष्य के बाह्य परिवेश की यात्रा के साथ-साथ अंतरंग की भी यात्रा है। इस यात्रा में संभावना, उम्मीद, सुख-दुःख, उलझने, जटिलताएँ अनिवार्य रूप से आती हैं। दूसरे शब्दों में हिन्दी काव्य जगत् को अपने नूतन काव्य मूल्यों तथा काव्य दृष्टि से संपन्न एवं समृद्ध बनाने का काम अशोक वाजपेयी ने किया है। अशोक वाजपेयी को इसके लिए भले ही अलोचकों के उपहास तथा उपेक्षा का शिकार होना पड़ा किन्तु वे अपनी स्वीकृत भूमिका से यत्किचित भी विचलित नहीं हुए । समकालीन कविता में घर, परिवार तथा पड़ोस की सच्चाई को अवतरित करने का महत्वपूर्ण कार्य अशोक वाजपेयी करते हैं - "घर, परिवार और पड़ोस ये तीन ऐसे अभिप्राय हैं जो बहुत हद तक हमारी जिंदगी की सच्चाई, संभावना, सरहदें, सुख-दुःख, उलझने, व्याप्ति, जटिलताएँ अर्थात मनुष्य होने के अनुभव के बड़े हिस्से को निर्धारित करते हैं। आधुनिकता की झोंक में, दुर्भाग्य से, ये अभिप्राय अक्सर समकालीन कविता में हाशिये पर ढकेल दिए गए। अशोक वाजपेयी हिन्दी के उन विरले कवियों में से हैं जिन्होंने इन अभिप्रायों को पिछले चार दशकों से अपने प्रमुख सरोकारों में शामिल कर उन्हें अपनी कविता में बार बार अनेक रंगों में विन्यस्त किया है। प्रेम, मृत्यु और कलाओं के साथ ही ये अभिप्राय उनके कविता-संसार के साथ ही ये अभिप्राय उनके कविता संसार के भूगोल को, मर्म और आत्मीयता के साथ, उभारते-सँवारते हैं। 3

अशोक वाजपेयी की कविता को समकालीन कविता का प्रतिपक्ष इसलिए भी कहा जाना चाहिए क्योंकि समकालीन समय के हिन्दी कविता में प्रेम और विशुद्ध श्रृंगार की अनुपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यह स्थिति इतनी निर्णायक है कि ऐसा लगता है कि समकालीन कवियों ने ठान लिया हो कि विशुद्ध श्रृंगारिक काव्य का सृजन ही नहीं करना है। भारतीय साहित्य को जिस प्रकार भक्ति और सामाजिक प्रतिबद्धता की एक प्रदीर्घ तथा ठोस परंपरा है उसी प्रकार श्रृंगार वर्णन की भी एक शाश्वत परंपरा है। अशोक वाजपेयी उसी श्रृंगार के कवि हैं किन्तु यह भी सच है कि उनके काव्य में श्रृंगारिक रीति काव्य की पुनरावृत्ति नहीं है। बेशक उनकी कविता श्रृंगारिक संवेदना को लेकर उपस्थित होती है किन्तु वे रति भाव के कवि नहीं हैं। अशोक वाजपेयी भी स्वयं को श्रृंगार

की परंपरा का कवि तो मानते हैं किन्तु प्रेम के बरबस रति का कवि नहीं मानते - "मैं श्रृंगार की परंपरा का कवि हूँ.... मैं तो यही कहूँगा कि मेरी कविता का एक प्रमुख सरोकार प्रेम है, उसके लिए मैंने अक्सर रति का रूपक चुना है, लेकिन मैं प्रेम के बरबस रति का कवि नहीं हूँ। 4

अशोक वाजपेयी की कविता में प्रेम के विभिन्न मौलिक रूपकों का स्वयंस्फूर्त अविष्कार देखने को मिलता है। अपनी कविता के आरंभिक दिनों में से वे प्रेम और श्रृंगार के नये नये रूपक रचते रहे हैं। शनैः-शनै: उनके श्रृंगार और प्रेमाभिव्यक्ति में एक प्रकार का सचेत संतुलन आने लगा। इसलिए देखा जा सकता है कि उनकी कविताओं में कहीं-कहीं विद्यापति के श्रृंगारिक रूपकों की चमक है तो कहीं सूरदास के गोपियों का रूप सौंदर्य की आभा, जो पाश्चत रूपकों में बड़ी स्वाभाविकता से घुलमिल जाती है। जैसे "उसके अनुरक्त नेत्र उनके उदग्र-उत्सुक कुचाग्र उसकी देह की चकित धूप वह कैसे कहेगी हाँ? -उसके आर्द्र अधर कहेंगे – हाँ 5

समाज का एक घटक होने के नाते मनुष्य की कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं। सामान्य की अपेक्षा सृजनशील रचनाकार की यह जिम्मेदारी कुछ अधिक मात्रा में होती है। समाज का एक चिंतनशील एवं विचारवान सदस्य के रूप में समकालीन कवि जब तक अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाता है उसकी सृजनशीलता के कोई मायने नहीं होते हैं। अशोक वाजपेयी मूलतः कलावादी कवि होने के कारण कविता को विशुद्ध कविता के रूप में देखते हैं। कलाओं के आस्वादन के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मिति करने के लिए अशोक वाजपेयी प्रसिद्ध हैं। यह भी एक प्रकार से समय की आवश्यकतानुरूप ही माना जा सकता है। कविता जब नारों में कैद हो जाती है तो उसके प्रवाह और गति में शैथिल्य से कविता की हानि होने की संभावना होती है। इस कविता को बचाने के प्रयासों में अशोक वाजपेयी के प्रयास अत्यंत सराहनीय माने जा सकते हैं.

प्रायः अशोक वाजपेयी की कविता को समकालीन कविता का प्रतिपक्ष कहा जाता है। यह वक्तव्य अपने आपमें व्यापक विश्लेषण की अपेक्षा रखाता है। ज्ञानेन्द्रपति से लेकर अरविन्द त्रिपाठी तक के

आलोचकों ने 'प्रतिपक्ष' की अवधारणा का विवेचन किया है। वास्तव में यह शब्द राजनीति से संबंधित है। लोकतंत्र में जिस प्रकार सत्ता पक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण

होती है। उसी प्रकार प्रतिपक्ष की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। सत्ता पक्ष पर अंकुश रखने का कार्य प्रतिपक्ष करता है। भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. आंबेडकर ने प्रजातंत्र में सत्ता पक्ष से भी अधिक महत्व प्रतिपक्ष को दिया था, जिस प्रजातंत्र का प्रतिपक्ष कमजोर होगा वह प्रजातंत्र भी कमजोर होगा। यही बात काव्य के प्रजातंत्र पर भी लागू हो सकती है। अशोक वाजपेयी उन समर्थ कवियों में हैं जो कविताके प्रतिपक्ष के मुखिया की जिम्मेदारी अत्यंत बाखूबी निभाते हैं और समकालीन कविता के प्रजातंत्र की नींव मजबूत करते हैं। अशोक वाजपेयी के कविता समग्र अनुशीलन करने वाले विचारक श्री पंकज के मतानुसार –

" अशोक उन थोड़े विरल कवियों में हैं जिनके होने से कविता की एक जीवित सभ्यता पुर्न संभव है, काव्य सभ्यता को पुनर्नवा करने में अज्ञेय और रघुवीर के बाद आठ-दस लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका है, उनमें से एक अशोक वाजपेयी। 6

अन्त में हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि अशोक वाजपेयी की कविता न ही सामाजिक या राजनीतिक अनुभवों की अभिव्यक्ति करती है और न ही वह उन प्रदत्त विषयों, दृष्टियों और विचारधारा की भी कविता है, जिसे ढेर सारे कवि लिखकर धन्य हो रहे हैं। वह तो उस सर्वांगीण मानव सत्ता की कविता है जो न तो अनावश्यक तौर पर अपने गौरवपूर्ण अतीत को झुठलाती है, न साम्राज्यवादी आधुनिकता के बौद्धिक आतंक और दबदबे के समक्ष घुटने टेकती है। अशोक वाजपेयी यह सब कुछ इसलिए भी कर सके कि वे परम्परा और प्रगति के सही सिलसिले से अच्छी तरह से परिचित हैं। अशोक वाजपेयी हिन्दी साहित्य का वह नाम है, जो जिस प्रकार मान-सम्मान का पर्याय है उसी प्रकार अवहेलना, कुचेष्टा तथा उपहास का भी पर्याय रहा है। वे अपनी रुचियों, मान्यताओं और विचारों के लिए हिन्दी के साहित्य जगत में विवादास्पद हुए। उनके पास अपने विरोधियों के लिए बगैर अपना संतुलन खोए तर्क - सम्मत उत्तर मौजूद रहे हैं। उनका चिंतन, उनकी भाषा, लालित्य के साथ-साथ पवित्रता और दार्शनिकता का बोध प्रकट करता है। बेशक अशोक वाजपेयी की कविता समकालीन मानव भविष्य के प्रति निःसंदेह पक्षधरता की उम्मीद का दूसरा नाम हैं |

सन्दर्भ सूची :

1. 'कवि कह गया है' अशोक वाजपेयी पृ. १७५

2. ज्ञानेन्द्रवति से पत्राचार २१०९.२००६ का पत्र

3. 'पुरखों की परछी में धूप' अशोक वाजपेयी, आवरण पृष्ठ से उद्धृत

4. 'मेरे साक्षात्कार' अशोक वाजपेयी पृ. ११९-२०

5. 'अशोक वाजपेयी पाठ कुपाठ', सं. सुधीर पचौरी पू. ४६०

6. -वही - - वही – पृ. १११